P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि का अध्ययन

करणी सिंह
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

ममता पारीक
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
एस.एस.जी.पारीक स्नातकोत्तर,
शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर

सारांश

जीवन में संतुष्टि व्यक्ति की अवस्थानुसार परिवर्तनशील तथा जीवन के विभिन्न पक्षों में भिन्न–भिन्न होती है। जीवन में पूर्व अवस्था की संतुष्टि आगे आने वाली अवस्था की संतुष्टि का महत्त्वपूर्ण आधार बनती है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग एक लम्बे समय तक उपेक्षित, प्रताड़ित और शैक्षिक सुविधाओं से वंचित रहा। इन वर्गों का यह पिछड़ापन इनके जीवन में किसी न किसी प्रकार की असंतुष्टि का कारण बना। इस शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि स्तर में समानता पायी गयी।

मुख्य शब्द : आरक्षित वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, सामाजिक संतुष्टि, व्यैक्तिक संतुष्टि।

प्रस्तावना

जीवन के विभिन्न पड़ावों पर भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होने वाली संतुष्टि समेकित रूप से जीवन संतुष्टि स्तर का निर्धारण करती है। यदि इन क्षेत्रों में असंतुष्टि प्राप्त होती है, तो वह जीवन को संतुष्टि प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकती है या फिर जीवन में निराशावादी भावनाओं का समावेश कर देती है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन लक्ष्य होता है। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उसके द्वारा अनेक उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वह किसी न किसी मार्ग का चयन करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए मार्ग का चयन भी उसकी एक प्रकार की अप्रत्यक्ष संतुष्टि होती है। किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति हेतु उसके द्वारा किसी कार्य को बनाये रखना, बचाने का प्रयास करना या केवल उस कार्य की समाप्ति का प्रयास करना आदि समस्त कार्य उस व्यक्ति की जीवन संतुष्टि के प्रतिशत का द्योतक हैं।

मनुष्य केवल बौद्धिक या तर्कणाशील ही नहीं है, अपितु अनुभवशील भी है। मानवीय अनुभवों में सुख का अनुभव संतुष्टि, और दुःख का अनुभव असंतुष्टि है। मानवीय अनुभव विश्लेषण के आधार पर दार्शनिक बतलाते हैं कि वास्तविक संतुष्टि स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा, ज्ञान, सद्कार्य और एक शाश्वत् तथा अनिर्वचनीय सुख–शान्ति की आकांक्षा में है। लेकिन इन आधारों पर किसी भी सार्वकालिक या सार्वभौमिक नैतिक नियम का निर्माण नहीं किया जा सकता। व्यक्ति अपने वातावरण के अनुभव और विश्लेषणात्मक अवलोकन के माध्यम से उन्हें ग्रहण करता है तथा उसके अनुकूल आचरण करने हेतु अग्रसर होता है।

जीवन में संतुष्टि व्यक्ति की अवस्थानुसार परिवर्तनशील तथा जीवन के विभिन्न पक्षों में भिन्न–भिन्न होती है। जीवन में पूर्व अवस्था की संतुष्टि आगे आने वाली अवस्था की संतुष्टि का महत्त्वपूर्ण आधार बनती है। जिस व्यक्ति के जीवन में संतुष्टि का स्तर अच्छा होता है, वह रोमांचित, उत्साहित व प्रसन्न रहने वाला तथा दूसरों को प्रसन्न करने वाला होता है। व्यक्ति का व्यवहार व आकांक्षाएँ उसके अन्तर्मन का प्रतिबिम्ब होती हैं। इसी प्रकार जीवन संतुष्टि व्यक्ति के सुखमय जीवन का प्रतिबिम्ब होती है।

ब्राउन(1981) के अनुसार ''जीवन संतुष्टि एक गत्यात्मक प्रक्रिया मानी जाती है, जो जीवन पर्यन्त जारी रहती है।''

एक ही विद्यालय की एक ही कक्षा के विद्यार्थियों में समाज के सन्दर्भ में वर्गों के आधार पर भिन्नता पायी जाती है। विद्यार्थियों के इन वर्गों के आधार पर ही समाज का स्वरूप निर्धारित होता है। भारतीय समाज में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग एक लम्बे समय तक उपेक्षित प्रताड़ित और शैक्षिक सुविधाओं से वंचित रहा। इन वर्गों का यह पिछड़ापन इनके जीवन में

किसी न किसी प्रकार की असंतुष्टि का कारण बना। भारतीय संविधान में संवैधानिक और सांविधिक रूप से आरक्षण की व्यवस्था द्वारा समस्त आरक्षित वर्गों को विभिन्न अवसरों की उपलब्धता ने शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके पिछड़ेपन में कमी की है।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षित करने का एक पक्ष इनमें सकारात्मक वातावरण का निर्माण करने का भाव रहा है। जिस प्रकार किसी निश्चित जलवायु की वनस्पति को अन्य जलवायु में परिवर्धित करने का प्रयास किया जाता है, तो वह उस भिन्न जलवायु से प्रभावित होती है; उसी प्रकार विद्यार्थी का वंशानुक्रम भी अपने वातावरण से प्रभावित होता है। विद्यार्थी का वंशानुक्रम अपने समान वातावरण को प्राप्त होने पर अपनी शक्तियों को अधिक विकसित कर सकता है; चाहे वह पारिवारिक वातावरण हो या फिर उसके समाज का।

उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि का मापन शिक्षण संस्थाओं के लिए आरक्षित वर्ग के छात्रों की शक्ति का केन्द्र बिन्दु जानने और सुधार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायक सिद्ध हो सकता है। इसी महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

संबंधित साहित्य अध्ययन

पॉल आनन्द (2016) के अनुसार ''जीवन संतुष्टि वह तरीका है, जिससे व्यक्तियों द्वारा अपने जीवन और भविष्य की अपनी दिशाओं एवं विकल्पों के लिए वे कैसा महसूस करते हैं, का मूल्यांकन करते हैं।'' प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार आरक्षित वर्ग के छात्रों की जीवन संतुष्टि के आयाम सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम जीवन संतुष्टि के इन आयामों के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ मरयम (2012) नें अपने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में भारतीय व ईरानी जोड़ों में जीवन संतुष्टि को मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण कारक पाया। पुरी, पी. एवं दुबे, एस. (2011) नें अपने अध्ययन निष्कर्ष में जीवन संतुष्टि स्तर पर लड़के व लड़कियों में सार्थक अन्तर पाया। दुग्गल एवं गोयल (2014), भल्ला एवं अग्रवाल (2013), नेगी (2013), शर्मा एवं दित्तकवि (2013), कौर (2013), नलिना (2012), मीना (2012), कौर (2011), हसनैन एवं अन्य (2011), श्वेता (2011), ओझा (2010), मोना एवं एब्रोल (2009), लियोन्स एवं अन्य (2014), डोगन एण्ड सेलिक (2014), अकुन एवं अन्य (2014), ह्यूंगजुंग एवं अन्य (2014), इग्नेसियो इबेन्ज़ एवं अन्य (2014), एन्ड्रयूलिप एवं अन्य (2014), कोन्ग एवं जुकून (2013), क्रिस्टोफर एवं अन्य (2013), एश्ली एवं अन्य (2011), तमिनि एवं खराज़ी (2010), फियाकली एवं अन्य (2009), नें अपने अध्ययन जीवन संतुष्टि तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की जीवन संतुष्टि के आयाम, सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि पर आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेश में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर आरक्षित वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

संतुष्टि मापनी

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता करणी सिंह व निर्देशिका डॉ. ममता पारीक द्वारा निर्मित संतुष्टि मापनी का उपयोग छात्रों की सामाजिक संतुष्टि एवं व्यैक्तिक संतुष्टि का आकलन करने के लिए किया गया। यह संतुष्टि मापनी 15 से 19 वर्ष के आयु वर्ग वाले बालकों के संतुष्टि स्तर का आकलन करती है।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में झुझुनूँ जिले के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 300 छात्रों को; 100 अनुसूचित जाति से, 100 अनुसूचित जनजाति से तथा 100 अन्य पिछड़ा वर्ग से, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि
4. स्वतंत्रता अंश
5. प्रसरण विश्लेषण अथवा ऐनोवा (एफ–मान)
6. क्रान्ति मान अथवा टी–मान

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-11* July- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी संख्या – 1

चरिता के स्त्रोत, वर्गों का योग, मध्यमानों के वर्ग, स्वतंत्रता के अंश तथा प्रसरण विश्लेषण का प्रदर्शन

चरिता के स्त्रोत Variation	स्वतंत्रता के अंश df	वर्गों का योग SS	मध्यमानों का वर्ग Ms	F
समूहों के मध्य Bg	2	9.32	4.66	1.685
समूहों के अन्तर्गत Wg	297	821.34	2.765	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों और उनकी सामाजिक संतुष्टि के कुल आँकड़ों के मध्य बनी चरिता का एक–मार्गी विश्लेषण प्रदर्शित करती है।

यहाँ उपरोक्त तीनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमानों से प्राप्त प्रसरण विश्लेषण (एफ) का मान 1.685 है जो कि समूहों के मध्य स्वतंत्रता के अंश 2 तथा समूहों के अन्तर्गत स्वतंत्रता के अंश 297 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 3.03 से कम है, अतः तीनों समूहों के मध्यमानों में सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 1 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।

हालांकि इन तीनों वर्गों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर है। लेकिन तीनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र सामाजिक संतुष्टि स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी सामाजिक संतुष्टि में कोई विशेष अन्तर उपस्थित नहीं है।

लेखाचित्र संख्या – 1

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

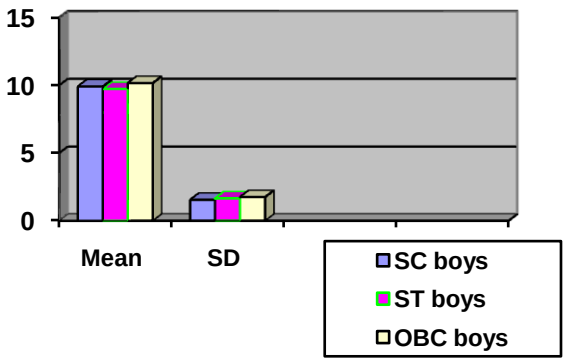

परिकल्पना–2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

चरिता के स्त्रोत, वर्गों का योग, मध्यमानों के वर्ग, स्वतंत्रता के अंश तथा प्रसरण विश्लेषण का प्रदर्शन

चरिता के स्त्रोत Variation	स्वतंत्रता के अंश df	वर्गों का योग SS	मध्यमानों का वर्ग Ms	F
समूहों के मध्य Bg	2	15.12	7.56	2.762
समूहों के अन्तर्गत Wg	297	813.13	2.737	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों और उनकी व्यैक्तिक संतुष्टि के कुल आँकड़ों के मध्य बनी चरिता का एक–मार्गी विश्लेषण प्रदर्शित करती है।

यहाँ उपरोक्त तीनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्यमानों से प्राप्त प्रसरण विश्लेषण (एफ) का मान 2.762 है जो कि समूहों के मध्य स्वतंत्रता के अंश 2 तथा समूहों के अन्तर्गत स्वतंत्रता के अंश 297 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 3.03 से कम है, अतः तीनों समूहों के मध्यमानों में सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–2 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।

हालांकि इन तीनों वर्गों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर है। लेकिन तीनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र व्यैक्तिक संतुष्टि स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी व्यैक्तिक संतुष्टि में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

लेखाचित्र संख्या – 2

उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

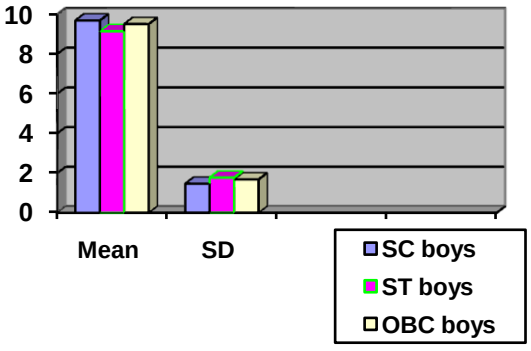

परिणाम

दत्त विश्लेषणों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 दोनों पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवारों की सामाजिक स्थिति सुदृढ है तथा इन वर्गों के छात्रों के साथ समाज में भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं किया जाता है।

इसी प्रकार उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 दोनों पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण की प्रकृति का स्वरूप सहयोगात्मक है। उपरोक्त वर्गों के छात्रों के प्रति अभिभावकों में सजगता का अभाव नहीं है।

निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की सामाजिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अनु. जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की व्यैक्तिक संतुष्टि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

आरक्षित वर्ग के परिवारों की सुदृढ सामाजिक स्थिति, इन वर्गों के छात्रों के साथ समाज में भेदभावपूर्ण व्यवहार का नहीं किया जाना, पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण की प्रकृति का सहयोगात्मक स्वरूप तथा छात्रों के प्रति अभिभावकों में सजगता का पाया जाना, आरक्षित वर्ग के छात्रों को जीवन में सकारात्मक दिशा प्रदान करने में सहायक है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए इन वर्गों के छात्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धाओं की वृद्धि की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें

1. *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
2. *मंगल, अंशु एवं अन्य (2006), शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा।*
3. *चौधरी, बी. नाथ एवं कुमार, युवराज (2013), आज का भारत; राजनीति और समाज, ओरिएन्ट ब्लैकस्वान प्रा. लि., नई दिल्ली।*
4. *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
5. *ठाकुर, हरिनारायण (2009), भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजशास्त्र, कल्पाज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
6. *व्यास एवं गहलोत (2010), राजस्थान की जातियाँ और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।*
7. *हटन,जे.एच. (2002), भारत में जाति प्रथा (अनुवादित), श्री जैनेन्द्र प्रेस, दिल्ली।*

शोध–प्रबन्ध

8. *कौर, हरजिन्दर. (2011), लाईफ सैटिसफैक्शन ऑव द एल्डरली इन रिलेशन टू परसिव्ड् स्ट्रेसः द रोल ऑव पॉजिटिव इफैक्ट, डॉक्टरल थीसिस, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।*
9. *नलिना,बी. (2012), सोसियल सपोर्ट रोल कॉनफ्लिक्ट मेण्टल हैल्थ एण्ड लाईफ सैटिसफैक्शन अमोन्ग मैरिड विमेन टीचर्स, वर्किंग इन आर्ट्स एण्ड साईंस कॉलेजेज़ एफिलेटेड टू भरतियार यूनिवर्सिटी कोयम्बटूर, डॉक्टरल थीसिस, भरथियार यूनिवर्सिटी, कोयम्बटूर।*
10. *मरयम, यावरी केरमानी (2012), इन्फ्लूएन्स ऑव इमोशनल इन्टेलीजेन्स, लाईफ सैटिसफैक्शन, पर्सोनेलिटी टाईप एण्ड सर्टेन डेमोग्राफिक वेरिएबल्स ऑन मेण्टल एण्ड फिजिकल हैल्थ ऑव इण्डियन एण्ड ईरानीयन कपल्स, डॉक्टरल थीसिस, अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ।*
11. *मीना, देवी (2012), वेल बींग ऑव हाईस्कूल फीमेल टीचर्स इन रिलेशन टू मैरिटल स्टेटस, इमोशनल इंटेलीजेन्स, लाईफ सैटिसफैक्शन एण्ड पर्सोनेलिटी हार्डिनेंस, डॉक्टरल थीसिस, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, हिमाचल।*

Magazine & Journals

12. *Acun-Kapikiran. et. al. (2014), The Relation of Parental Attitudes to Life Satisfaction and Depression in Early Adolescents: The Mediating Role of Self-esteem, Educational Sciences: Theory & Practice, Vol. 14(4), pp 1246-1252.*
13. *Andrewleep. et. al. (2014), The relationship between cell phone use, academic performance, anxiety, and Satisfaction with Life in college students, Computers in Human Behavior, Vol. 31, pp 343–350.*
14. *Ashley, D. Lewis. et. al. (2011), Life Satisfaction and Student Engagement in Adolescents, Journal of Youth and Adolescence, Vol. 40(3), pp 249-262.*
15. *Bhalla, Vidhi & Aggarwal Suresh. (2013), Life Satisfaction of Teacher Educators in Relation to Their Ego Resilience, Educational Herald, Vol. 42(3), pp 15-24.*
16. *Ceren, Fiyakali. et. al. (2009), Loneliness and Life Satisfaction in Adolescents with Divorced and Non-Divorced Parents, Educational Sciences: Theory & Practice, Vol. 9 (2), pp 513-525.*
17. *Christopher, J.B. et. al. (2013), Is Personality Fixed? Personality Changes as Much as "Variable" Economic Factors and More Strongly Predicts Changes to Life Satisfaction, Social Indicators Research, Vol. 111(1), pp 287-305.*
18. *Dogan & Celik. (2014), Examining the Factors Contributing to Students' Life Satisfaction,*

Educational Sciences: Theory & Practice, Vol. 14(6), pp 2121-2128.

19. *Duggal, Kiran & Goyal, Seema. (2014), Burnout of schooteachers in Relation to Life Satisfaction and Mental Helth, EDUTRACKS, Vol. 13(8), pp 22-26.*
20. *Feng Kong & Xuqun You. (2013), Loneliness and Self-Esteem as Mediators Between Social Support and Life Satisfaction in Late Adolescence, Social Indicators Research, Vol. 110(1), pp 271-279.*
21. *Hasnain, N. et. al. (2011), Life Satisfaction and Self Esteem in Married and Unmarried Working Women, Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, Vol. 37(2), pp 316-319.*
22. *Hyunjung, et. al. (2014), How does online social networking enhance life satisfaction? The relationships among online supportive interaction, affect, perceived social support, sense of community, and life satisfaction, Computers in Human Behaviour, Vol. 30, pp 69-78.*
23. *Ignacio Ibanez. et. al. (2014), Relevance of gender roles in life satisfaction in adult people, Personality and Individual Differences, Vol. 70, pp 206-211.*
24. *Kaur, Jasraj (2013), Life Satisfaction in Relation to Self-Esteem, Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 44(1), pp 100-102.*
25. *Lyons, Michael D. et. al. (2014), Life satisfaction and maladaptive behaviors in early adolescents, School Psychology Quarterly, Vol. 29(4), pp 553-566.*
26. *Puri, P. & Dubey S. (2011), Level of Stress, Life Satisfaction and Resilience Between Boys and Girls, Behavioural Scientist, Vol. 12(2), pp 201-204.*
27. *Mona, P.K. & Abrol, M. (2009), Socio-Genic Need and Life Satisfaction Among Athletes and Their Non-Athlete Counterparts, Behavioural Scientist, Vol. 10(1), pp 29-34.*
28. *Neogi, Susmita. (2013), Social Well-Being and Life Satisfaction of Middle-Adulthhood Working Women and Housewives, Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions, Vol. 29(1), pp 60-64.*
29. *Ojha, Sandhya. (2010), Life Satisfaction Among Widows: Review and Some Empirical Findings, Indian Journal of Psychometry and Education, Vol. 42(2), pp 203-207.*
30. *Sharma, V. & Dittakavi, S.S. (2013), Life Satisfaction and Spirituality Among Depressed Elderly, Behavioural Scientist, Vol. 14(1), pp 3-10.*
31. *Shweta. (2011), Effect of Personality Type on Life Satisfaction in Adults, Praachi Journal of Psycho-Cultural Dimensions, Vol. 27(2), pp 134-136.*
32. *Tamini, B. Kord & Kahrazei. (2010), General Helth and Life Satisfaction of Students in Polygamy and Monogamy Families, Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, Vol. 36(2), pp 307-310.*

References: Websites

33. *www.eric.ed.gov*
34. *www.scholar.google.com*
35. *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*